REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

मराठी कविता का स्वरूप

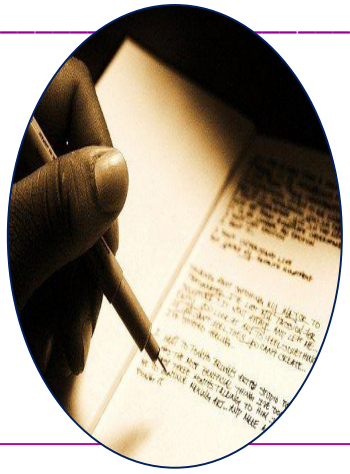

डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे
अध्यक्ष हिंदी विभाग ,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय तुलजापुर जि. उस्मानाबाद.

प्रस्तावना :

कवि की अभिव्यक्ति, रसज्ञता को विभिन्न प्रेरणा तथा आनंद जैसे उददेश्य साधनेवाली कविता को मराठी कविता कहते है। कविता मानव मन का नवनिर्माण है। कविता का संबंध हमारे अस्तित्व से होता है। कवि का पूर्वसंस्कार ही कविता के लिए सामग्री पहुंचाता है। विचार, शक्ति, संवेदना, भावनायें और जीवनानुभव की प्रतिबध्दता से ही काव्य का जन्म होता है प्रतिदिन, प्रतिसमय सहज रूप से घटित घटनाओं को विशेष अर्थ प्राप्त होता है अथवा उसमें विशेष सौंदर्य की प्राप्ति होती है और वे जब शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है तब वह कविता होती है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक मराठी काव्य विकासक्रम, उसने धारण किए हुए नये नये रूप, रंग और मोड और प्रत्येक काल में किन किन कवियों का निर्माण हुआ और उनकी कविता से आशय और अभिव्यक्ति ने मराठी काव्य को किस प्रकार से सस्मृध्द किया है यह देखना आनंद दायक होगा।

मराठी कविता सही अर्थो में वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक है। इसमें वैयक्तिक अनुभव, सुख दुख, देशभक्ति, सामाजिकता, मराठी अभिमान आदि समस्त क्षेत्रों को स्पर्श करनेवाली मराठी कविता है। वास्तविक मराठी साहित्य का इतिहास प्राचीन न होकर मध्युगीन कहना संगत होगा।

मराठी कविता में आधुनिक काल की शुरूआत केशवसुत से होती है। इसलिए उन्हें मराठी कविता के प्रणेता कहा जाता है। उन्होंने आशय ओर अभिव्यक्ति दोनों अंगों के माध्यम से मराठी काव्य में बगावत की। नई काव्यधारा लाने का श्रेय केशवसुत को दिया जाता है। उनकी बगावत, हरपलेले श्रेय, तुतारी, नवा शिपाई, झपूर्झा, स्फुर्ति, सतारीचे बोल आदि एक से बढकर एक कवितायें मराठी काव्य जगत को आधुनिक साबित कर पाई है। आधुनिक कविता में सभी प्रकार के विचार प्रवाह देखने को मिल जाते है। आगे चलकर बालकवि का उल्लेख करना उचित होगा। उनकी कविताओं सौंदर्यवाद की प्रेरणा, अत्यांतिक प्रकृति प्रेम, प्रकाश की ओर आकर्षण, अति और प्रगाढ उदासिनता, नई चेतना का ध्यास आदि उनकी कविताओं की विशेषता मानी जा सकती है। फुलराणी, खेडयातील रात्र, उदासीनता, औदुंबर, श्रावणमास आदि कवितायें मराठी काव्य में मील के पत्थर साबित हुई।

अभिजातवाद और सौंदर्यवाद का समन्वय करनेवाले बहुव्यक्तिमत्व कवि राम गणेश गडकरी उर्फ गोविंदग्रज का नाम लेना उचित होगा। असफल प्रेम उनकी कविता की विशेषता मानी जाती है। विहिणीचा कलकलाट, हुकमे हुकुम, चिंतातूर जंतू, एक समस्या आदि कवितायें हास्यामत्कता से प्रचुर है।

मराठी काव्य जगत में स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने वीररस, देशभक्ति, कल्पना की भव्यता, विचारप्रधानता, तरल भावुकता जैसी विशेषताओं को लेकर मराठी काव्य विकास में योगदान दिया है। अनुभवों की विभिन्नता,

कल्पकता, गेय रचना, रहस्यात्मकता, रूपकात्मकता जैसी विशेषताओं को लेकर भास्कर तांबेजी ने विलोभनीय प्रणय गीतों की रचना की है।

1920 से 1947 तक आधुनिक मराठी कविताओं का द्वितीय चरण माना जाता है। इस काल में विभिन्न प्रवाह से जुडी काव्यरचनायें उपलब्ध होती है। इसी काल में रविकिरण मंडल के नाम से कवियों के एक समूह का बालबाला रहा, जिन्होंने यह घोषित किया कि कविता पंडितों के लिए नही है। कविता दैनिक जीवन का अंग है। माधव ज्युलियन, श्री. बा. रानडे, मनोरमा रानडे, गजानन माडखोलकर, द. ल. गोखले, शंकर कानेटकर, यशवंत पेढारकर आदि कवि सदस्य थे। इस काल में इस मंडल को बहुत ही लोकप्रियता मिल गई। इसी काल में प्र. के अत्रे उर्फ केशवकुमार का झेडूची फुले नामक व्यंग्य काव्य प्रसिध्द हुआ। कवि अनिल का फुलवात नामक कविता संग्रह 1932 में आया। उन्होंने कविताओं में नये नये प्रयोग किए। कवि अनील को मराठी काव्य में मुक्तछंद के प्रवर्तक के रूप में देखा जाता है। मराठी कविता में प्रयोगशीलता, नया मोड उनकी रचनाओं से देखा जाता है।

1935–1945 के दशक में दो महत्वपूर्ण कवि बा. भ. बोरकर और कुसुमाग्रज जी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है बोरकर के कविता संग्रहों में प्रतिभा, जीवन संगीत, आनंदभैरवी तथा दुधसागर प्रमुख है। कुसुमाग्रज भी इसी काल के कवि थे। उन्हाने अपना स्वतंत्र काव्य प्रयोग करना शुरू किया। विशाखा नामक रचना में उनकी यह स्वतंत्र वृत्ति देखी जा सकती है। विशाखा के साथ साथ जीवनलहरी, किनारा, रसयात्रा, वादळवेल, स्वगत, मूघदूत का मराठी अनुवाद आदि काव्य संग्रह प्रसिध्द हुए।

1945 के बाद समकालीन कविता का दौर शुरू होता है। समकालीन कविता मनुष्य जीवन और उसकी विविधताओं की खोज करती है। यह आत्मपरक, व्यक्तिगत और बालचाल की भाषा में लिखने का प्रयास करती है। मराठी काव्य के विषयों में भी बडे परिवर्तन दिखाई देते है। 1947 में बा.सी. मर्ढेकर द्वारा लिखित काही कविता नामक काव्य संग्रह आया और यहीं से नयी कविता की शुरूआत हुई। इसलिए बा. सी . मर्ढेकर को नयी कविता के प्रणेता कहा जाता है। आदर्शवाद, स्वप्नरंजन से कविता मानवी सुख दुख, दैनंदिन जीवन, स्त्री पुरूष संबंध की ओर मोड लेती है। सौंदर्यवाद से यथार्थवाद में परिणित मराठी कविता के विकास में नया मोड आ जाता है। बोरकर और कुसुमाग्रज जैसे कवियों ने नयी कविता को आत्मसात करने के बावजूद भी सौंदर्यवादी धारा की लय वैसेही बनाई रखी।

1947 से 1960 तक नई कविता का काल रहा है। भावनाओं के नाटकीय उदात्तीकरण को त्यागकर वास्तव पर आधारित काव्य रचनाओं का निर्माण करना, मुक्तछंदों का प्रयोग, आशय और सृजन में अभिन्नता, निराशावाद, यंत्रयुगीन वास्तविकता आदि नई कविता की विशेषता है। 'नयी कविता की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए अनेक विद्वानइस बाप पर सहमत हैं कि नयी कविता द्वितीय महायुध्द से उत्पन्न विध्वंस और स्ततंत्रता आन्दोलन से मोहभंग की स्थिति में पडे हुए मानव हदय को अभिव्यक्त करती है।'[1] इस काल के कवियों मे बा.सी. मर्ढेकर, कवि अनील, कुसुमाग्रज, बोरकर, पु. शि.रेगे, मुक्तिबोध आदि प्रमुख है। सबसे अधिक नई कविता को आत्मसात करने का श्रेय बापट, पाडगांवकर और करंदीकर को जाता है। इसमें मराठी कवियित्रियां भी पीछे नहीं रही। शांता शेळके, इंदिरा संत, इस काल की प्रधान कवियित्रियां रही।

स्वातंत्र्योत्तर मराठी काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है। प्रथम काल 1947 से 1960 और द्वितीय काल 1960 के बाद का काल। प्रथम काल के प्रवर्तक बा. सी. मर्ढेकर जी का सन 1956 में देहांत हो गया और सन् 1960 के लगभग स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भ्रांति निराशावाद मे बदल गया। दलितों में अन्याय के खिलाफ आवाज उठने लगी। उस समय नवयुवक संतप्त थे। इसी कारण वर्तमान परिस्थितियों राजकीय, सामाजिक, राजकीय आदि का प्रभाव साहित्य पर पडना स्वाभाविक था। संतप्त युवा वर्ग ओर दलित चेतना साहित्य में मुखर हुई। उनकी अभिव्यक्ति कविताओं के माध्यम से होती रही। मनोहर ओक –आयत्या कविता, सतीश काळसेकर –इंद्रियोपरिषद, वसंत गुर्जर–अरण्य, भालचंद्र नेमाडे–मेलडी, तुलसी परब–हिल्लोल, अरूण कोल्हटकर–काळया कविता, दिलीप चित्रे– कवितेनंतरच्या कविता, वसंत डहाके – योगभ्रष्ट, गुरूनाथ धूरी–ग्लोरिया आदि कवि साठोत्तरी कविता के प्रधान कवि रहे है। इन कवियों में से दिलीप चित्रे, अरूण कोल्हटकर, की काव्य रचनायें नवकविता का अगला मोड मानी जाती है। मराठी कविताओं को आधुनिक करने में इन कवियों का बहुत बडा योगदान रहा है। 1960 से मराठी कविताओं पर अस्तित्ववाद का घना कोहरा दिखाई देता है। अस्तित्ववादी अनुभवों का घूंट पीते हुए जीवन की कटूता को खोलकर दिखाने का प्रयास इन कवियों का रहा है।

साठोत्तरी दलित कविताओं को स्वतंत्रतापूर्व काल की पृष्ठभूमि है। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर की कार्यप्रेरणा से साठोत्तरी दलित कविता में आवेश आ गया। दया पवार–कोंडवाडा, यशवंत मनोहर– उत्थान गुफा, बामन निंबाळकर– गावकुसाबाहेरील कविता, अर्जुन डांगळे – छावणी हलते आहे, नामदेव ढसाल –गोलपीठा, हिरा बनसोडे – पूर्णिमा आदि कवि इस धारा के माने जाते है। 1960 के बाद दलित वर्ग की अन्य जातियों के कवियों लेखकों द्वारा भी लिखना शुरू हुआ। गंगाधर पानतावणे जी का 'अस्मितादर्शन' से साहित्य के लिए मंच प्राप्त हुआ। एक नई सामाजिक संवेदनशीलता का प्रवेश मराठी कविता में हुआ।

मुंबई जैसे महानगर में मजदूरी बस्ती में से आगे आया कवि नारायण सुर्वे ने 'कामगार आहे मी तळपती तलवार आहे.... सारस्वतांनों थोडासा गुन्हा करणार आहे' जैसी काव्यरचना कर मजदूर वर्गो की व्यथा को प्रस्तुत किया। ऐसा गा मी ब्रहम, माझे विद्यापीठ, जाहिरनामा यह तीन महत्वपूर्ण कविता संग्रह उनके है। इनके अतिरिक्त साठोत्तरी कविता में आरती प्रभु, सुरेश भट, कवि ग्रेस, आनंद यादव, पुरूषोत्तम पाटील, शंकर वैद्य, आदि उल्लेखनी है।

सुरेश भट ने भावगीत एवं गजलों की रचना की है। पु. शि रेगे की कविताओं में भाव और शृंगार का खुलता हुआ रंग इनकी कविताओं की विशेषता है। 1949 में विंदा करंदीकर का स्वेदगंगा उल्लेखनीय है। प्रकृति और प्रेम मंगेश पाडगांवकर की कविताओं की विशेषता रही है। धारानृत्य, जिप्सी, छोरी आदि काव्यसंग्रह प्रसिध्द है।

सत्तरोत्तर काल में नारायण कुलकर्णी, गुरूनाथ सामंत, उत्तम कालगांवकर, अशोक नायगांवकर, अरूण म्हात्रे, अनुराधा पाटील, नीरजा, अशोक वागवे, प्रज्ञा लोंखंडे, आसावरी काकडे आदि उल्लेखनीय कवि रहे है। बीसवीं सदी में फुटीरता, सांप्रदायिकता, अराजकता आदि भयावह परिस्थिति के बीच काव्य विषय प्रस्फुटित हो रहे है। नये कवि और नया विचार यह आज की कविता की विशेषता मानी जा सकती है। तकनीक से जीवन में बहुत ही परिवर्तन एवं क्रांति हुई है। नये नये भाव इस काल की कविता में प्रविष्ट हुए है। नारायण काले, मंगेश, रमेश इंगले, नितिन वाघ, सलील वाघ, संजीव खांडेर, हेमंत दिवटे, गणेश सातपुते आदि कवि सामाजिक तथा मानवीय अस्तित्व पर लेखन करते दिखाई देते है।

मराठी संत कवियों से लेकर आज की आधुनिक कालीन कविता पर दृष्टि डालने के बाद मराठी काव्य जगत ने साहित्य के अनेक रूपों में मराठी साहित्य को समृध्द किया है। भारत में परंपरागत त्योंहार के साथ संस्कृति, प्रथा परंपरा पर भी लिखा गया है साथ ही आधुनिक कालीन कम्प्युटर और इंटरनैट की दुनिया से जुडी विषयों पर भी लिखा गया है।

2.4 निष्कर्ष

साहित्य चाहे किसी भी भाषा का हो वह जन मन का प्रतिनधित्व करता है। वही साहित्य अनादि काल से जीवित रहता है जिसमें समाज से जुडी गहरी संवदेनायें हो। जो साहित्य पूरी तरह से काल्पनिक मात्र होता है वह मात्र अल्पकालीन मनोरंजन मात्र के लिए होता है। मराठी और हिंदी की कविताओं में वास्तव, आदर्श, नीतिविषय और मानवीय अधिकारों से जुडे विषयों पर काव्य सृजन किया है। इसलिए मराठी और हिंदी कविता का काव्य इतिहास काफी समृध्द माना जाता है।

संदर्भ संकेत :

1. डॉ. बन्नाळीकर मनोहर, नयी कविता हिंदी–मराठी, पृ. 95